491
P
106
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1286/10/71

आह्वानांक Call No. ____

अवाप्ति सं० Acc. No. 491

/1911

'Kranti Ka Bigul'
Govt. of U.P. R.No. 255
14.2.40
in Hindi
IMPERIAL RECORD Department
491

"देशी और विदेशी हालत को देखते हुए कांग्रेस की राय है
कि अब आजादी के सिद्धांत पर पूरी तरह से अमल
किया जाए जिससे कि हिन्दुस्तान की जनता एक
आजाद और प्रजातंत्र राज पञ्चायत
द्वारा क़ायम कर सकें।"

—त्रिपुरी-कांग्रेस

क्रान्ति का बिगुल

ख़ूनी जंग,

फेडरेशन, फासिज्म और साम्राज्यशाही

का

विरोध करो

हिन्दू मुस्लिम एक हो

"हर तरह की लड़ाई की तैयारी का विरोध किया जाए"

—फ़ैज़पुर प्रस्ताव (१९३६)

"ब्रिटिश सरकार ने प्रजातंत्र सरकारों का कुचलने में मदद दी है। कांग्रेस फ़ासिज्म और साम्राज्यशाही दोनों की दुश्मन है"

—त्रिपुरी (१९३९)

"देशी रियासतों में बढ़ती हुई राजनैतिक बेचैनी का कांग्रेस स्वागत करती है"

—त्रिपुरी कांग्रेस

मूल्य)। पैसा

लेखक

आशाराम

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 491
Date 1.1.271
GOVT. OF INDIA

माधो प्रिंटिङ्ग वर्क्स,
बैरहना, इलाहाबाद

प्रकाशक
जी० आर० त्रिपाठी

आज हमारे सर पर लड़ाई के बादल घिरे हुए है। आम जनता के सामने रास्ता साफ़ नहीं। जब जब जनता का असर पड़ा है कांग्रेस ने जनता की मांगों के मुताबिक अपने सालाना अधिवेशनों में प्रस्ताव पास किए हैं। कांग्रेस के प्रस्ताव हमारे सारे सवालों का साफ जबाव देते हैं लेकिन उनका जनता में अच्छी तरह से प्रचार नहीं हुआ। इसलिए पब्लिक अभी तक अन्धकार में है। हमारे राष्ट्रीय सप्ताह मनाने का मतलब कांग्रेस के प्रस्तावों की मदद से जनता की मुश्किलों का हल करना और उसे एक रास्ता दिखाना है।

आजादी—"स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है" तिलक के यही शब्द कांग्रेस की जान है। कांग्रेस उन शहीदों की संस्था है जिन्होंने भारत की आज़ादी के लिए जान बलिदान की है, जो ब्रिटिश साम्राज्य-शाही से लोहा लेना चाहते हैं। यह कांग्रेस किसी एक जत्थे, ग्रूप या पार्टी—चाहे वे गांधीवादी हों या सोशलिस्ट—की बपौती नहीं। कांग्रेस में रहकर देश की आजादी का सिपाही होने का हक मुल्क के हरएक दीवाने को हैं।

इस आजादी को हासिल करने के लिए कांग्रेस ने वक़्त वक़्त पर अपनी पालिसी बनाई है।

फेडरेशन—ब्रिटिश गवर्नमेंट ने समय समय पर कांग्रेस को जाल में फांसने के लिएइसके सामने टुकड़े फेंके हैं जिनको कांग्रेस हमेशा ठुकराती रही है। ब्रिटिश गवर्नमेंट ने जो फेडरेशन का मसौदा सन् १९३५ के एक्ट के मुताबिक दिया उसके ऊपर कांग्रेस ने प्रस्ताव पास किए जिनका मतलब साफ यह है कि हम किसी भी बाहरी ताकत को यह अधिकार नहीं देते कि यह हमारे लिए विधान बनाए। हिन्दुस्तानी खुद ही ब्रिटिश साम्राज्यशाही को मिटाकर, अपनी आजादी हासिल करके अपने प्रतिनिधियों द्वारा, एक पञ्चायत में स्वराज्य का अपना मसौदा तैयार करेंगे। 'कांग्रेस के ख़याल में

(१९३५ के एक्ट) इस विधान के साथ किसी तरह का समझौता करना हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई को कमजोर करना और उस साम्राज्यशाही और उसके शोषण को मज़बूत करना है जिसने की जनता को चूंसकर ग़रीब बना दिया है।"

फैजपुर प्रस्ताव नं० १७

"कांग्रेस फिर से अपने पक्के इरादे का एलान करती है कि वह देश के लिए पूर्ण आजादी प्राप्त करेगी। और एक आजाद भारत का विधान भारत के चुने प्रतिनिधियों से बनवाएगी।"

त्रिपुरी प्रस्ताव नं० ४

राजनैतिक क़ैदी—कांग्रेस ने सिर्फ ब्रिटिश साम्राज्यशाही के फन्दों को ही नहीं समझा बल्कि उसके बिछे हुए जाल को तोड़ने के लिए एक लड़ाई का प्रोग्राम भी रक्खा है। और साथ ही कांग्रेस ने आजादी के दीवाने बहादुरों को साम्राज्यशाही की बेड़ियों से छुड़ाने के लिए न सिर्फ हमदर्दी के प्रस्ताव पास किए हैं बल्कि ब्रिटिश साम्राज्यशाही की निन्दा की है और जनता से आंदोलन कर इन बहादुरों को छुड़ाने के लिए अपील भी की है।

"यह कांग्रेस ब्रिटिश सरकार की राजबंदियों को वहशी ढंग से बिना मुकदमें के जेल में सड़ाने की पालिसी की घोर निन्दा करती है।"

फ़ैजपुर ९-१९३६

नागरिक अधिकार—कांग्रेस जनता की रोज बरोज की छोटी छोटी आजादियों के लिए हमेशा लड़ती रही है। उसने अपने करांची के प्रस्ताव में धर्म, लिखने, बोलने, मिलने जुलने और अखबार निकालने की पूरी आजादी के असूल को माना है।

"कांग्रेस पूरे नागरिक और व्यक्तिगत अधिकारों की न सिर्फ ब्रिटिश हिंदुस्तान बल्कि सारे हिन्दुस्तान (मय रियासतों के) लिए हामी है औरवह इन अधिकारों के लिए लड़ती रहेंगी।"

अल्प मत जातियां—मुस्लिम इसाई वगैरह अल्पमत जातियों के अधिकारों, उनकी ज़ुबान संस्कृति और लिपि, उनके धार्मिक विश्वास और उनकी स्वतंत्रता को। करांची प्रस्ताव (नं०१४) से पूरी गारंटी दिलाती है। कांग्रेस ने साम्प्रदायिक समझौते पर अपनी राय साफ़ करदी है कि वह आपसी समझौते से ही बदला जाएगा। कांग्रेस हिंदू मुस्लिम एकता पर हमेशा जोर देती रही है।

किसान मज़दूर—कांग्रेस जनता की संस्था है उसे हिन्दुस्तान के ग़रीब मज़दूर किसानों की रहनुमाई और प्रतिनिधित्व करने का गौरव प्राप्त है। कांग्रेस ने करांची के प्रस्ताव नं० (१४) में माना है कि हर एक मज़दूर किसान का हक है कि वह अपने लिए सुख से रहने के लिए एक अच्छी ख़ासी तनख़्वाह मांगे और स्वराज्य की सरकार ऐसा करेगी। फैजपुर के प्रस्ताव और चुनाव के एलान में यही बातें दुहराई गई हैं। किसान और मज़दूरों को अपनी सभाएं और यूनियन बनाने का भी पूरा पूरा हक़ हासिल है। फैज़पुर के प्रस्ताव में उसने जमींदारी प्रथा की इस शक्ल को मिटाने और सूद ख़ोरी को हटाने का फ़ैसला किया है। लगान में काफी कमी करने पर जोर दिया है।

रियासतें—हिन्दुस्तान की एक चौथाई जनता एक तिहाई मुल्क में आज भी सामन्तशाही के घोर अत्याचारों का आए दिन सामना किया करती है। कांग्रेस की पालिसी इसके बारे में साफ है। हिन्दुस्तान के साथ ही रियासतों में भी स्वराज्य स्थापित किया जाएगा। न सिर्फ़ इतना, बल्कि रियासती प्रजा को उसके आन्दोलन में मदद दी जाएगी।

साम्राज्यशाही और फ़ासिज्म—इन मांगों के लिए कांग्रेस को अपनी दुश्मन अंग्रेज़ी साम्राज्यशाही से मोर्चा लेना होगा। इसलिए साम्राज्यशाही और उसकी पालिसी को समझना ज़रूरी हो जाता है।

कांग्रेस समझती है कि ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने हर जगह प्रजातंत्र सरकारों को मिटाने, जन-आंदोलनों को दबाने, आजादियां छीनने और अन्तर्राष्ट्रीय गुण्डाशाही फ़ासिज्म को फैलाने में मदद दी है। यही ब्रिटिश साम्राज्यशाही आज डेढ़-सौ साल से हिन्दुस्तान की आजादी को बेरहमी से कुचलती रही है।

इस लुटेरों की लीडर ब्रिटिश सरकार ने शान्ति के अगुवा किसान मज़दूरों के राज रूस को तबाह करने की बार बार कोशिश की है। इस बेईमान साम्राज्यशाही ने जापान को मंचूको हड़प करने में मदद दी, इटली को अबीसीनिया और अलबेनिया के कुचलने में साथ दिया, और राइन, आस्ट्रिया, जेकोस्लोकिया और मेमेल को जर्मनी के हवाले कर हिटलर को रूस पर हमला करने के लिए दावत दी। ऐसी हालत में ब्रिटिश सरमायेदारी के सरदार चेम्बरलेन को रूस को खत्म करने की उम्मीदों पर पानी फेर, जर्मनी से सन्धिकर रूस ने एक बार फिर से दुनियां की शोषित जनता की रहनुमाई की है। उसने चीन की सरकार को जान और माल से मदद देकर जापानी फ़ौजशाही के मन्सूबों पर भारी चोट पहुँचाई है।

आनेवाली लड़ाई—आज फिर इस ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने हमको लड़ाई की आग में ला पटका है। हमको आज भी पिछली बड़ी लड़ाई की याद है जिसमें हमारे लाखों बहादुर नौजवान काम आए और जिसमें हमारा अरबों रुपया और लाखों मन खाने पीने का सामान बर्बाद हुआ। लेकिन बदले में मिला क्या ? हमारे सर पर करोड़ों का कर्ज, उसका सूद, रौलट जैसे काले कानून और जलयानवाला बाग जिसमें हमें खून की नदिया बहानी पड़ी।

आज साम्राज्यशाही फिर लाखों आदमियों का खून चाहती है, करोड़ों की भेंट मांगती है। कांग्रेस की पालिसी लड़ाई पर बिल्कुल साफ

है—"कांग्रेस ज़रूरी समझती है कि मुल्क को ऐसी लड़ाई के खिलाफ़ अगाह किया जाए और ऐसे किसी भी शोषण को रोकने की तैयारी की जाए। हर तरह की लड़ाई की तैयारियों का विरोध किया जाए"। हमारी आजादी के दुश्मन दलील देते हैं कि इङ्गलैंड मुल्कों की आजादी बचाना चाहता है—लेकिन हम अच्छी तरह से जानते हैं कि वह क्या चाहता है। डेढ़ सौ साल से हिन्दुस्तानियों को गुलाम रखनेवाली साम्राज्यशाही आजादी की दुश्मन है। हम पहिले अपनी आजादी हासिल करेंगे और बाद में तै करेंगे कि किस की मदद करें। आजादी पहिले—मदद का सवाल बाद में। हमारी कांग्रेस हमेशा से साम्राज्यशाही की दुश्मन और जनता की आजादी की हामी रही है। हमने जापान जर्मनी इटली और इङ्गलैंड की साम्राज्यशाही की घोर निन्दा की है, उसने चीन, स्पेन अबीसीनिया और फ़लस्तीन की जनता को मदद की है। आज मौका है और कांग्रेस अबकी बार बिना चूके साम्राज्यशाही से फिर लोहा लेगी।

हमारा प्रोग्राम—यह बात राष्ट्रीय मांग के त्रिपुरी प्रस्ताव में साफ कर दी गई है। कांग्रेस समझती है कि अब देशी और विदेशी हालत को देखते हुए साम्राज्यशाही को ख़त्म करने और अपनी आजाद सरकार क़ायम करने का वक्त आ गया है। इस वक्त ब्रिटिश सरकार काफ़ी कमजोर है, इधर हमारे हाथ ज्यादा मज़बूत हैं, हमारे किसान मज़दूर सङ्गठित हैं रियासतों की प्रजा उठ खड़ी हुई है, नौजवान आगे बढ़ रहे हैं और कांग्रेस का जनता पर पूरा असर है। यही साम्राज्यशाही को मुल्क से निकाल बाहर करने का वक्त है। यही आजादी की जंग का बिगुल बुलन्द करने का समय है।

हमारा रास्ता—रास्ता साफ है। हिन्दू-मुस्लिम एकता हो कांग्रेस के अंदर फूट की नीति का अन्त हो। किसान मज़दूरों की मांगों और विद्यार्थियों और मध्यमवर्ग की ज़रूरतों को सामने रक्खा जाए और

इन सब श्रेणियों का फौलादी सङ्गठन कर एक मज़बूत फौज बनाकर साम्राज्यशाही के गढ़ पर धावा बोला जाए। ब्रिटिश और बिदेशी माल का बायकाट हों, लगान और टैक्स देना बन्द किया जाए, मुल्क भर में मज़दूरों सरकारी नौकरी विद्यार्थियों और आम जनता की हड़तालें हो, और मुल्क का कोना कोना इन्क़लाब और आज़ादी के इन नारों से गुञ्जार उठे।

साम्राज्यशाही का नाश हो।
ख़ूनी जंग का बाँयकाट हो।
हिन्दुस्तान आज़ाद हो।

राष्ट्रीय आन्दोलन का मुख-पत्र किसान-मजदूरों का रहनुमा

नया हिन्दुस्तान

पढ़िए

साम्राज्यी जंग के समय हम क्या करें ?
राष्ट्रीय आज़ादी की लड़ाई क्यों छेड़ें ?

यह जानने के लिए

नया हिन्दुस्तान ही सबसे अच्छा साप्ताहिक है।

वार्षिक २)   एक प्रति का)॥

सम्पादक

सज्जाद ज़हीर